Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी टेस्ट-2 (तुलसीदास) आदर्श उत्तर कुंजी पूर्णांक 20

प्रश्न 1. "राम कृपा तुलसी सुलभ, गंग सुसंग समान।" पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पंक्ति में तुलसीदास जी ने भगवान राम की कृपा से गंगा और सत्संगति प्राप्त होना सुलभ बताया है। गंगा और सत्संगति दोनों का स्वभाव एक जैसा होता है। दोनों ही सम्पर्क में आने वाले को अपने जैसा पवित्र और सज्जन बना देते हैं। जो गंगा के जल में मिलता या प्रवेश करता है। उसे गंगा अपने समान ही पवित्र बना देती है। इसी प्रकार सत्संगति भी साथ में रहने वाले व्यक्ति को सद्गुणों से युक्त सज्जन पुरुष बना दिया करती है।

प्रश्न 2. तुलसीदास का साहित्यिक परिचय दीजिए

उत्तर: **1532** ई में उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के राजापुर गाँव में जन्मे तुलसीदास का बचपन अत्यन्त कठिनाइयों में बीता। कष्टों के दौर से गुजरकर उन्होंने गुरु नरहर्यानन्द व शेष सनातन से शिक्षा ग्रहण की। वे अपनी पत्नी रत्नावली से अति स्नेह रखते थे लेकिन एक दिन रत्नावली द्वारा उत्प्रेरित किए जाने पर उनके हृदय में रामप्रेम जाग्रत हो गया।

तुलसीदास ने अवधी तथा ब्रज भाषा में कई ग्रंथों की रचना की। **रामचरितमानस** उनकी कीर्ति का आधार ग्रंथ है। अन्य प्रसिद्ध ग्रंथों में **विनय पत्रिका, कवितावली. दोहावली. गीतावली. कृष्ण-गीतावली. बरवै रामायण कथा रामलला नहछू** प्रमुख हैं।

तुलसी के काव्य में समन्वय की भावना सर्वोपरि है उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से आदर्शसमाज की जो कल्पना प्रस्तुत की है, वह कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती तुलसी का काव्य भारतीय समाजका आदर्श पथप्रदर्शक है।1623 ई. में तुलसीदास जीकी मृत्यु हो गयी।

प्रश्न 3. संकलित दोहों के आधार पर तुलसीदास की रचनाओं की काव्यगत विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

उत्तर: संकलित दोहों के आधार पर तुलसीदास की निम्नलिखित काव्यगत विशेषताएँ सामने आती हैं। भाषा-कवि ने साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। लक्षणा शब्द शक्ति के प्रयोग से भाषा को प्रभावशाली बनाया है। शैली-तुलसी की कथन शैली उपदेशात्मक तथा प्रेरणादायिनी है। कहीं-कहीं मधुर व्यंग्य का भी प्रयोग किया गया है। रस-कवि शान्त रस की सृष्टि करने में पूर्ण दक्ष है। अलंकार-कवि ने अनुप्रास, उपमा, रूपक तथा दृष्टांत आदि अलंकारों का स्वाभाविक रूप से प्रयोग किया है। विषय-संकलित दोहों में कवि ने मानव जीवन को सुखी एवं

सार्थक बनाने के लिए प्रेरणादायक विषयों का चुनाव किया है।

प्रश्न 4.सप्रसंग व्याख्या कीजिए (कोई दो) 2×4 = 8

1. काम क्रोध मद लोभ रत, गृहासक्त दुःख रूप।
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं, मूढ़ परे भव कूप॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित प्रस्तुत दोहा तुलसीदास रचित दोहावली से लिया गया है। इस दोहे में तुलसीदास जी बता रहे हैं कि काम, क्रोध, लोभ आदि विकारों में और पारिवारिक मोह में फँसे मूर्ख लोग कभी भगवान राम की महत्ता नहीं जान सकते

व्याख्या- तुलसी कहते हैं जो लोग काम, क्रोध, मल, लोभ आदि दुर्गुणों से ग्रस्त हैं तथा घर-परिवार के मोह को नहीं त्याग सकते, वे संसार रूपी कुएँ में पड़े हुए हैं। ऐसे मूर्ख कभी भगवान राम की महिमा और कृपा का लाभ नहीं पा सकते।

विशेष-

(i) तुलसीदास जी का स्पष्ट सन्देश है कि राम की कृपा पाने और सांसारिक बन्धनों से मुक्त होने के लिए व्यक्ति को काम, क्रोध, मद, लोभ आदि दुर्गुणों का त्याग करना अनिवार्य है।

(ii) दुर्गुणों से ग्रस्त और गृहासक्ति के जंजाल में फंसे लोगों को कवि ने मूर्ख माना है क्योंकि वे सांसारिक विषय-भोगों में लिप्त होकर अपने जीवन को व्यर्थ कर रहे हैं।

(iii) भाषा साहित्यिक ब्रज है। तत्सम तथा तद्भव शब्दों का सहज मेल है।

(iv) कथन शैली उपदेशात्मक तथा व्यंग्यात्मक है।

(v) 'काम क्रोध' में अनुप्रास तथा भव कूप' में रूपक अलंकार है।

2. कहिबे कहँ रसना रची, सुनिबे कहँ किए कान।
धरिबे कहँचित हित सहित, परमारथहिं सुजान॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित प्रस्तुत दोहा तुलसीदास रचित दोहावली से लिया गया है। प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी 'परमार्थ' अर्थात् सबसे उत्कृष्ट लक्ष्य, ईश्वरप्राप्ति में ही शरीर के अंगों को लगाने का उपदेश कर रहे हैं।

व्याख्या- कवि कहते हैं कि ईश्वर ने मनुष्य को बोलने के लिए जीभ या वाणी दी है। सुनने के लिए कान दिए हैं और कल्याणकारी शिक्षाओं को धारण करने के लिए चित्त दिया है। इन सभी अंगों की सार्थकता इसी में है कि मनुष्य इनका उपयोग सबसे श्रेष्ठ लक्ष्य अर्थात् परमार्थ में ही करे। सांसारिक विषयों के उपभोग में इनकी क्षमताओं को नष्ट न करे॥

विशेष-

(i) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, ये चार मानव जीवन के पुरुषार्थ माने गए हैं। इनको प्राप्त करना ही 'पुरुष' होने का अर्थ है। परन्तु इन सबसे बढ़कर 'परमार्थ' आत्मज्ञान या मोक्ष-प्राप्ति मानी गई है।

(ii) इन्द्रियों की सार्थकता कवि ने परमार्थ सिद्धि में ही मानी है।

(iii) सरल ब्रजभाषा का प्रयोग है।

(iv) अनुप्रास अलंकार का सहज प्रयोग है।

3. तुलसी असमय के सखा, धीरज धरम बिबेक।
साहित साहस सत्यव्रत, राम भरोसो एक॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित प्रस्तुत दोहा तुलसीदास रचित दोहावली से लिया गया है। प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी बता रहे हैं कि बुरा समय आने पर व्यक्ति के कौन से गुण उसका साथ दिया करते हैं।

व्याख्या- तुलसीदास जी कह रहे हैं कि जब मनुष्य का विपरीत समय आता है अर्थात विपत्तियां आती है तो धैर्य, धर्मपालन, विवेक, श्रेष्ठ ग्रन्थ, साहस, सत्य पर दृढ़ रहना और एकमात्र भगवान पर पूरा भरोसा रखना, ये ही वे गुण हैं जो संकट के समय मनुष्य का साथ दिया करते हैं। इनके बल पर व्यक्ति बड़े-से-बड़े संकट मे पार हो जाता है।

विशेष-

(i) सच्चा मित्र वही होता है जो बुरे समय में साथ देता है। उपर्युक्त गुणों के रहते हुए संकट में मनुष्य को किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता नहीं होती। ये ही मनुष्य के वास्तविक मित्र होते हैं। यही दोहे का भाव है।

(ii) भाषा में सहज प्रवाह है। भावानुकूल शब्दावली का प्रयोग है।

(iii) कथन शैली प्रवचनात्मक है।

(iv) ‘ धीरज धरम’ तथा ‘साहित, साहस, सत्यव्रत’ में अनुप्रास अलंकार है।

इस प्रश्न-पत्र की
आदर्श उत्तर-कुंजी आप
03:00 बजे बाद इस लिंक
https://tinyurl.com/y66j6z98
से डाउनलोड कर सकते हैं।

कक्षा 12 (अनिवार्य हिन्दी - सृजन) परीक्षा की दृष्टि से सरल व आसान व्याख्या एवं हल प्रश्न उत्तर सहित Free PDF Download इस से कीजिए-
https://tinyurl.com/y6tpcbsp

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg